सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-30 अंक-19 7 अक्तूबर, 2015 मुख्य संपादक कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती कुल पृष्ठ 8 मूल्य : 2 रुपये

कश्मीर घाटी में हिंसा रोकने हेतु तुरंत निवारक कदम उठाने व नागरिकों की सुरक्षा की गारंटी देने की एसयूसीआई(सी) ने की माँग

कश्मीर में अज्ञात हत्यारों द्वारा 3 साल के बच्चे की हत्या पर गहरे दुख का इजहार करते हुए 21 सितम्बर को जारी बयान में एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने कहा :

18 सितम्बर की शाम को कश्मीर के सपोर में अज्ञात बदमाशों द्वारा 3 साल के बच्चे को गोली से उड़ा देने की खबर पर हम गहरा दुख व्यक्त करते हैं। असल में गत पाँच महीनों के दौरान उत्तरी कश्मीर में काफी संख्या में रहस्यमय ढंग से हुई हत्याओं की खबरें आई हैं। मासूम बच्चों को भी नहीं बख्श रहे गुमनाम हत्यारों द्वारा की जा रही ऐसी अंधाधुंध हत्याएं दर्शाती हैं कि कैसे इस राज्य के हालात तेजी से बद से बदतर होते जा रहे हैं जो आम नागरिकों की जान बचाने, हिफाजत करने, हिंसा पर काबू पाने और सशस्त्र पुलिस के भारी जत्थों के अलावा इतनी बड़ी तादाद में सैन्य व अर्ध-सैनिक बलों की तैनाती के बावजूद सीरियल हत्यारों को पकड़ने में केन्द्र और राज्य सरकारों, दोनों की तरफ से बरती जा रही कोताही को उजागर कर रहे हैं।

अपराधियों को जल्द से जल्द पकड़ने व उनको सख्त सजा देने के साथ-साथ पीड़ित परिवारों को पर्याप्त मुआवजा देने की माँग करते हुए हमारा दृढ़ मत है कि राज्य में बढ़ती हिंसा, दहशतगर्दी व हत्याओं पर खोखली चिल्लपों मचाने और युद्धांतक पैदा कर हालात को और भी बिगाड़ने और पाकिस्तान के साथ वाक् युद्ध में उलझने की बजाय केन्द्र व राज्य सरकार को राज्य की कानून-व्यवस्था सुधारने के लिए बेगुनाह नागरिकों की सुरक्षा की गारंटी के लिए और घाटी में शांति और सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए तुरंत उचित कदम उठाने चाहिएं।

पश्चिम एशिया की शरणार्थी त्रासदी

तुर्की के समुद्री तट पर बह कर आये लाल टी शर्ट व नीली नीकर में 3 साल के सीरियाई बच्चे की बेजान लाश जो बालू रेत पर औंधे मुंह पड़ी थी, उसको देख कर पूरी दुनिया सन्न रह गई। इस खामोश देह की चीख भूमध्य सागरीय क्षेत्र में भड़के युद्ध व विस्थापन की विभीषिका को पेश करती है। यह तस्वीर जिसने दुनिया भर के लोगों में हलचल मचा दी है और उन्हें झकझोर कर रख दिया है, वियतनाम में नापाम बम हमले से भाग रही युवती फान थि किम फुक जिसकी चमड़ी झुलस कर उतर रही है उसकी तस्वीर, सूडान के भुखमरी से अस्थि पिंजर बने एक बच्चे पर मंडराते हुए गिद्ध की फ्लैश हुई तस्वीर की कड़ी में आ जाती है। ये उनके अपने-अपने देशों में बरपाये गये इसी तरह के आतंक की द्योतक बन गई हैं। वियतनाम, सुडान, सोमालिया, कम्बोडिया, इथोपिया और दूसरी जगहों को साम्राज्यवादी साजिशों, लूट-खसोट के अड्डे में तब्दील कर देने के बाद, अमेरिकी साम्राज्यवादियों की अगुआई में जंगखोर साम्राज्यवादी शार्क अब पूरे पश्चिमी एशिया में आतंक मचाये हुए हैं। स्थानीय और आंशिक युद्ध करवाने, साजिशें रचने, हुकूमत बदलने, तख्ता पलट करने के लिए जाल बुनने से लेकर कठपुतली सरकारें बिठाने, लोगों को एक-दूसरे से भिड़ाने तक सब कुछ उनकी पश्चिमी एशियाई नीति के खाके में था। उनकी लूटेरी नीतियों के नतीजतन ही गैर-जनवादी खूंखार कट्टरपंथी ताकतें अपना मनहूस सर उठा रही हैं, अति गलित, संवेदनहीनता के साथ अंधाधुंध हिंसा में लिप्त होती जा रही हैं और आतंक बरपा रही हैं और लोगों पर कहर ढा रही हैं। यह शरण की तलाश में ही नहीं, बल्कि जान बचाने के लिए सीरिया, लीबिया, सुडान, अफगानिस्तान और दूसरे कई देशों के हजारों हजार लोगों के हो रहे पलायन का सबब बनता जा रहा है। वे सब सम्प्रभु राष्ट्रीय राज्यों के नागरिक हैं। लेकिन आज वे रातोंरात प्रवासी या शरणार्थी बन कर रह गये हैं और बेताबी से दूसरे देशों के भूभागों में घुसपैठ कर जिन्दा रहना चाह रहे हैं।

विशाल पैमाने पर यह पलायन क्यों?

मीडिया डूब कर मरे बच्चों और डूबती हुई नावों की परेशान कर देने वाली तस्वीरों को प्रसारित कर रहा है, ट्रकों में लदी लोगों की गली-सड़ी लाशें और रेलवे स्टेशनों पर व सड़कों के किनारे लगे हुए दमघोंटू खेमों में पड़े हजारों हजार लोगों की व्यथा-कथा को कलमबद्ध कर रहा है। मीडिया ये आँकड़े भी दे रहा है कि किस 'मानवतावादी' यूरोपीय देश के द्वारा कितने शरणार्थियों का स्वीकारा जाएगा। लेकिन शरणार्थियों के इतनी बड़ी संख्या में उमड़े इस हजूम की वजह के बारे में उसके होंठ सिले हुए हैं। लेकिन हमारा सवाल है कि यह त्रासदी घटी क्यों? क्या चीज है जो इन असहाय शरणार्थियों को उनके घर-बार से दूर ले जा रही है, उनके खेत-खलिहानों और कल-कारखानों से उन्हें बेदखल कर रही है? वे सूखा-अकाल पड़ने या ज्वालामुखी फटने जैसी किसी प्राकृतिक आपदा के शिकार नहीं हुए हैं। तब यह विस्थापन और पलायन क्यों हो रहा है? साफ जाहिर तथ्यों पर एक सरसरी नजर डालने पर यह बात उजागर हो जाएगी कि वे दादागिरी, लूटपाट और आक्रमणकारी युद्धों के जरिये अपने प्रभाव क्षेत्र के विस्तारीकरण के उनके जघन्य एजेण्डे को सिरे चढ़ाने के लिए इन मौत के सौदागरों, साम्राज्यवादियों, खासकर

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तन के आधार पर विजयी होगी भारतीय क्रान्ति

– केरल के कोल्लम की जनसभा में कॉमरेड माणिक मुखर्जी

(यह भाषण 5 अगस्त, 2015 को कॉमरेड शिवदास घोष के 39वें स्मृति दिवस पर एस.यू.सी.आई.(सी) पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी द्वारा केरल के कोल्लम में दिया गया था।)

कॉमरेडो, आपने हमारे कुछ अगुआ कॉमरेडों के भाषण सुने हैं। निश्चित ही उन्होंने इस अवसर की गरिमा अनुकूल कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को छुआ होगा। क्योंकि मैं मलयालम नहीं जानता, हो सकता है कि उन्होंने जो कुछ रखा है उसमें से कुछ बिन्दु मेरे भाषण में भी दोहराए जाएं। इसके लिए आप मुझे क्षमा करेंगे।

आप जानते हैं 5 अगस्त का यह दिन हम सभी के लिए वास्तव में ही एक बहुत दुखद दिन है। सिर्फ हमारे लिए ही नहीं बल्कि भारतीय मजदूर वर्ग के लिए भी। इसी दिन सर्वहारा के महान नेता और हमारी पार्टी के संस्थापक महामंत्री कॉमरेड शिवदास घोष ने 39 साल पहले अपनी अंतिम सांस ली थी। उनके असामयिक निधन से वास्तव में ही हम सभी को गहरा धक्का लगा था। जब उनका निधन हुआ वे मात्र 55 वर्ष के थे। यह

कोल्लम में जनसभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड माणिक मुखर्जी

हमारे देश के क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए गहरी क्षति थी। लोगों को इस बात से अवगत कराना हमारा फर्ज बनता है कि वे कितने प्रखर मार्क्सवादी चिन्तनकार और दार्शनिक थे और कैसे उनका चिन्तन सही रास्ते पर चलने में हमारा मार्गदर्शन कर सकता है। अपनी किशोर अवस्था में कॉमरेड शिवदास घोष ब्रिटिश-विरोधी आजादी आन्दोलन के दौरान एक क्रान्तिकारी संगठन अनुशीलन समीति से जुड़े थे। वे आजादी आन्दोलन की क्रान्तिकारी धारा के एक कार्यकर्त्ता थे। आजादी आन्दोलन के

(शेष पृष्ठ 2 पर)

कॉ. माणिक मुखर्जी का भाषण ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

चक्रवात में रहते हुए वे मार्क्सवाद के सम्पर्क में आए और इसे अपने जीवन दर्शन के रूप में ग्रहण कर लिया। विश्लेषण की मार्क्सवादी पद्धति के आधार पर वे समझ सके कि समझौते के माध्यम से जो आजादी हासिल होने जा रही है वह भारतीय लोगों की चाहत को पूरा नहीं कर सकती जो हर तरह के शोषण के जुए से मुक्ति के लिए लड़े थे। उन्होंने समझ लिया था कि हम राजनैतिक तौर से मुक्त होंगे लेकिन मानव द्वारा मानव का शोषण जारी रहेगा क्योंकि ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को हटा कर भारतीय पूँजीपति वर्ग राजसत्ता पर काबिज हो जाएगा। तत्कालीन भारत की ठोस स्थिति का विश्लेषण करते हुए कॉमरेड घोष ने यह भी समझा कि तब देश में कोई सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी। यदि ऐसी एक पार्टी रहती तो इतिहास कोई दूसरा ही मोड़ ले सकता था। अविभाजित सीपीआई थी लेकिन उसकी सैद्धान्तिक अवधारणाओं, राजनैतिक कदमों और फैसलों की पड़ताल करते हुए वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यह पार्टी सिर्फ कम्युनिस्ट नाम लेकर चलती थी लेकिन चरित्र में कम्युनिस्ट नहीं थी। और हम सभी जानते हैं कि एक क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के बिना क्रान्ति नहीं हो सकती है। क्योंकि सीपीआई एक सही कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में नहीं उभरी थी। इसीलिए कॉमरेड घोष उसमें शामिल नहीं हो सके। न ही वे किसी दूसरी पार्टी में शामिल हो सके जो दावा करती थी कि वे सभी मार्क्सवादी, क्रान्तिकारी है लेकिन वे सभी सोशल डैमोक्रेटिक पार्टियाँ थीं। अत: भारतीय क्रान्ति की जरूरत को समझते हुए यहाँ एक सही कम्युनिस्ट मॉडल पर एक सही कम्युनिस्ट पार्टी निर्माण की ऐतिहासिक जिम्मेदारी उन्होंने अपने कंधों पर ले ली। इस प्रकार हमारी पार्टी एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) का निर्माण हुआ जो कॉमरेड शिवदास घोष की सर्वोत्तम कृति है।

अगला महत्त्वपूर्ण बिन्दू है कि राजसत्ता पर भारतीय राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग के सत्तासीन होने के साथ ही भारत एक सार्वभौम बुर्जुआ राष्ट्र बन गया। ये पूँजीपति ही हैं जो लोगों का दमन और शोषण कर रहे हैं मजदूर वर्ग को उनके न्यायसंगत हक से वंचित कर रहे हैं। अपने साम्राज्यों का निर्माण करने के लिए उनकी अतिरिक्त श्रम शक्ति का दोहन कर रहे हैं। हर बीते दिन के साथ अमीर और अमीर हो रहे हैं, गरीब और गरीब होते जा रहे हैं। वांछित और इच्छित मुक्ति केवल तभी आ सकती है जब इस दमनकारी पूँजीवादी स्टेट मशीन को जो शोषणमूल पूँजीवादी व्यवस्था की रक्षा कर रही है, क्रान्ति के जरिए ध्वस्त कर दिया जाएगा। अत: अत्यावश्यक काम है पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के जरिए पूँजीवाद को उखाड़ फेंकना। पूँजीवाद-विरोधी क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए सहायक सही क्रान्तिकारी नेतृत्व के तहत वर्ग और जनसंघर्षों को संचालित करने और तीव्रतर करने के जरिए ही इस क्रान्ति को अंजाम दिया जा सकता है। इस प्रक्रिया की तार्किक परिणति यह होगी कि क्रान्ति सफल होगी और पूँजीवाद से साम्यवाद में संक्रमण की मध्यवर्ती अवस्था के रूप में सर्वहारा के अधिनायकत्व के तहत समाजवाद स्थापित कर दिया जाएगा। यह है प्रक्रिया। यही है दिशानिर्देश। यह हमें पूरी तरह साफ होना चाहिए। अब क्योंकि हमारी पार्टी इस सरजमीं पर सही मार्क्सवादी-लेनिनवादी पद्धति के आधार पर असल कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में गठित हुई है, यह ऐतिहासिक तौर पर भारतीय क्रान्ति को संगठित करने और नेतृत्व देने के लिए तैयार है। हम सभी नेता, कार्यकर्ता, समर्थक और हमदर्द कॉमरेड शिवदास घोष के छात्र हैं और इसलिए इस महान नेता ने जो सपना संजोया था उसे साकार करने के लिए संकल्पबद्ध हैं। यही वजह है कि हम सभी वर्ग और जन संघर्षों, मजदूरों, किसानों, छात्रों, नौजवानों, महिलाओं और मेहनतकश जनता के अन्य तबकों के संघर्षों का निर्माण करने में संलिप्त हैं। जैसा कि आप जानते हैं, कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं से लैस हो कर हमने बहुत से शानदार आन्दोलन संगठित किए हैं।

कॉमरेड्स, बहुत से दक्षिणपंथी संगठनों के साथ-साथ वामपंथी, यहाँ तक कि मार्क्सवाद का जामा पहने हुए सोशल डैमोक्रेटिक पार्टियाँ हैं जो लोगों को सलाह देती हैं कि कष्टसाध्य प्रयासों के जरिए क्रान्तिकारी आन्दोलन निर्मित करने की कोई जरूरत नहीं है। वे लोगों को बताते हैं कि चुनावों के माध्यम से ही व्यवस्था को बदला जा सकता है। चुनाव के माध्यम से लोग अपनी पसंद की सरकार चुन सकते हैं और इस प्रकार अपनी दुख तकलीफों को कम कर सकते हैं। आवश्यक राजनैतिक चेतना के अभाव में, लोग भी भ्रमित हो जाते हैं और इन वोट बटोरू पार्टियों के प्रचार के बहाव में बह जाते हैं। हमें वोट देने का अधिकार है। इसलिए हम उस पार्टी को सरकार बनाने के लिए वोट दे सकते हैं, जो जनमुखी हो। यदि हम ऐसी एक पार्टी को सत्ता में बैठा सकें जो जनमुखी हो तो वह हमारे हितों की सेवा करेगी और बिना क्रान्ति के ही हमारे जीवन की मूल समस्याओं का समाधान कर देगी। तब क्रान्ति की जरूरत क्या हैं? लोगों के एक बड़े तबके में सोचने का आम ढंग यही है। क्योंकि वे बुर्जुआ प्रचार तंत्र द्वारा प्रभावित कर दिए गए हैं।

लोगों की यह भ्रान्ति एक मूलभूत सवाल पर केन्द्रित है। मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्टालिन-माओ त्से-तुंग से शुरू कर हमारे प्रिय नेता, शिक्षक और पथ प्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष तक सभी ने हमें सिखाया है कि राजसत्ता और सरकार एक चीज नहीं है। सरकार तो राजसत्ता की चौकीदार है वोट के जरिए सरकार बदली जा सकती है लेकिन राजसत्ता कायम रहती है। असल शक्ति पूँजीवादी राजसत्ता में निहित है। लेकिन लोग इसे अक्सर गढ़मढ़ कर देते हैं। मान लेते हैं कि दोनों एक ही हैं। आमतौर पर सरकार और राजसत्ता पूरा तालमेल बनाए रखती हैं क्योंकि सत्तासीन होने वाली सभी पार्टियाँ बुर्जुआ वर्ग हितों की सेवा करती हैं, चाहे वे कोई झण्डा लहराती हों या किसी भी रंगत की हों। इसीलिए राजसत्ता और सरकार के बीच का फर्क सामने नहीं आ पाता है। लेकिन सरकार और राजसत्ता के बीच यदि द्वन्द्व हो जाए तो यह तफर्का तेजी से सामने आ जाएगा। मार्क्सवाद का छात्र होने के नाते हम जानते हैं कि पूँजीवादी ढांचे के अंतर्गत चुनाव जीवन की मूल समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते हैं। हाँ, हमें वोट डालने का अधिकार है। मान लो हमारी पार्टी, एक असल कम्युनिस्ट पार्टी वोट के जरिए सत्ता में आ गई। क्या यह व्यवस्था बदल सकती है? क्या यह जीवन की मूल समस्याओं का समाधान कर सकती है? नहीं, क्योंकि पूँजीवादी राजसत्ता बरकरार रहेगी। मिलिट्री, पुलिस-प्रशासन और न्यायपालिका तीन अवयव हैं, ये आधुनिक पूँजीवादी राजसत्ता के तीन स्तम्भ हैं। यह राजसत्ता पूँजीपति वर्ग के स्वार्थ की रक्षा करती है। यह दमनकारी पूँजीवादी शासन की रक्षा करती है। यह पूँजीवादी व्यवस्था की रक्षा करती है जो मानव द्वारा मानव के शोषण पर आधारित है। यही वजह है कि किसी भी क्रान्ति में आखिरी सवाल राजसत्ता का सवाल है, राजसत्ता का चरित्र निर्धारण करना और राजसत्ता को बदलने के लिए रणनीति निर्धारित करना है। लेनिन ने अपनी शानदार पुस्तक 'राज्य और क्रान्ति' में इन तमाम बुनियादी मुद्दों पर चर्चा की है।

फिलहाल एक और भ्रान्ति व्याप्त हो रही है। बहुत से लोग सोचते हैं कि भारतीय संविधान सार्वभौम है, पवित्र है और इसलिए अनुल्लंघनीय है वे सोचते हैं कि यदि एस.यू.सी.आई.(सी) जैसी कोई अच्छी पार्टी सरकारी गद्दी पर बैठ जाए तो यह संविधान में बदलाव लाकर व्यवस्था को बदल सकती है। लेकिन याद रखें कि संविधान और कुछ नहीं बल्कि राजसत्ता को संचालित करने वाले मूलभूत नियमों का समूह है। एक वर्ग विभाजित समाज में, संविधान का भी वर्ग चरित्र है। या तो यह मजदूरों के नहीं तो पूँजीपति मालिकों के स्वार्थ की सेवा करेगा। एक पूँजीवादी समाज में, इसीलिए संविधान शोषणकारी शासक पूँजीपति वर्ग के स्वार्थ की रक्षा करता है। इसलिए एक पूँजीवादी देश का संविधान मजदूर वर्ग की रक्षा के लिए नहीं होता है। यही वजह है कि सभी देशों के मार्क्सवादी क्रान्तिकारी कहते हैं कि क्रान्ति का उद्देश्य पूँजीवादी राजसत्ता को उखाड़ फेंकना और इसकी जगह सर्वहारा के अधिनायकत्व में मजदूर वर्ग की राजसत्ता स्थापित करना है। कुछ लोग सवाल करते हैं कोई अधिनायकत्व क्यों होना चाहिए जब हम एक लोकतांत्रिक देश में रह रहे हैं? वे गलतफहमी में हैं। हाँ, चुनाव, संसद और सरकार के साथ लोकतंत्र (डैमोक्रेसी) का एक मुखौटा है। लेकिन असल में यह पूँजीपति वर्ग का अधिनायकत्व है। यदि किसी कारणवश, किसी मुद्दे पर चुनी हुई संसद और राजसत्ता के बीच द्वंद्व पैदा हो जाए, लोगों के हित और पूँजीपति मालिकों के हित के बीच कोई द्वंद्व पैदा हो जाए तो राजसत्ता पूँजीपति मालिकों की रक्षा करेगी, न कि लोगों की। बुर्जुआ अधिनायकत्व जो कि शासक शोषणकारियों और दमनकारियों का अधिनायकत्व है, जनवाद के इस तमाम दिखावे के माध्यम से काम करता है। इसके विपरीत, समाजवाद में यह मुट्ठीभर पराजित पूँजीपतियों के खिलाफ सर्वहारा की भारी बहुसंख्या का अधिनायकत्व होगा और समाजवादी राजसत्ता मजदूरों और आम मेहनतकश जनता के स्वार्थ की रक्षा करेगी। यही कारण है कि क्यों हम पूँजीवादी स्टेट मशीन को ध्वस्त किए बिना और मजूदर वर्ग राजसत्ता स्थापित किए बिना मुक्ति हासिल नहीं कर सकते हैं और क्रान्ति करने के लिए हमें निरंतर जन और वर्ग संघर्षों के माध्यम से लोगों और मजदूर वर्ग को तैयार करना चाहिए।

जैसा कि कॉमरेड घोष द्वारा सिखाया गया है जब तक मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी पार्टी पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के लक्ष्य को हासिल करने के लिए अकेले अपने दम पर तमाम जन आन्दोलनों को संयोजित करने और नेतृत्व देने लायक जरूरी सांगठनिक ताकत हासिल नहीं कर लेती है तब तक वामपंथी और जनवादी ताकतों का संयुक्त मोर्चा एक ऐतिहासिक और वास्तविक जरूरत है। यह संयुक्त मोर्चा जहाँ सांझे दुश्मन के खिलाफ आन्दोलन के मंच पर लोगों को एकजुट करता है और जनसंघर्षों को आगे बढ़ाने के लिए एक हथियार के रूप में काम करता है। वहीं आन्दोलन के चक्रवात में खींच लाई गई विशाल जनता को समझौतावादी पेटी-बुर्जुआ एवं सोशल डैमोक्रेटिक ताकतों के प्रभाव से मुक्त होने में भी मदद करता है, सही क्रान्तिकारी सिद्धांत और पार्टी से उन्हें अधिकाधिक अवगत कराता है। और क्रान्ति की सच्चाई से लैस होने में उन्हें मदद करता है। आम तौर पर लोग नहीं समझते हैं कि कौन सी पार्टी सही है, कौन सी पार्टी असल क्रान्तिकारी पार्टी है। दूसरी तरफ बहुत सी पार्टियाँ खुद के बारे में दावा करती हैं कि वे सही क्रान्तिकारी पार्टी हैं। उदाहरण के लिए जहाँ हम इस सरजमीं पर असल कम्युनिस्ट पार्टी होने का दावा करते हैं। वहीं पार्टियाँ जैसे सीपीआई, सीपीआई(एम), आर.एस.पी., नक्सलवादी गुट और पूर्ववर्ती अविभाजित सीपीआई के छिटके हुए अन्य ग्रुप भी यही दावा करते हैं। तब यह जांचने का क्या तरीका है कि कौन सी पार्टी असल क्रान्तिकारी पार्टी है? संयुक्त मोर्चे के दायरे के अन्दर उनकी राजनीति, सैद्धान्तिक स्थिति, वर्ग संघर्ष और जन संघर्षों के प्रति उनका नजरिया, आन्दोलन संचालित करने का ढंग, नेतृत्व के नैतिक, सांस्कृतिक स्तर और चरित्र के अवलोकन और तजुर्बे के माध्यम से उनको जांचना सबसे बढ़िया तरीका है। जब संयुक्त मोर्चे द्वारा संचालित संघर्ष में लोग खुद देख सकते हैं कि कौन पार्टी गंभीरता से और गैर-समझौतावादी ढंग से आन्दोलन को नेतृत्व दे रही है, सही कार्यक्रम पेश कर रही है, घटकों के अन्दर सैद्धांतिक संघर्ष संचालित करने के साथ-साथ संघर्षशील एकता की रक्षा और बचाव का प्रयास कर रही है और संसदवाद की तरफ भटकाव और ध्यान बंटाने को रोकने के लिए जी तोड़ प्रयास कर रही है। इस प्रक्रिया में, पेटी-बुर्जुआ समझौतावादी ताकतें बेनकाब हो जाती हैं और धीरे-धीरे जनता से अलग-थलग पड़ जाती हैं और सही क्रान्तिकारी पार्टी सामने आ जाती है और लोगों को अपने प्रभाव के तहत ले आती है। जैसा कि आपने लक्ष्य किया है बिलकुल निचले स्तर से जन संघर्ष कमेटियों के निर्माण पर हमारा जोर है। उद्देश्य क्या

(शेष पृष्ठ 6 पर)

देश भर में सम्मान पूर्वक मनाई गई शहीद-ए-आजम भगत सिंह जयंती

दिल्ली, रामपुरा में शहीद भगत सिंह स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए डीवाईओ के उपाध्यक्ष कॉ. दीपक कुमार

देश भर में आजादी आन्दोलन की समझौताहीन संघर्ष की धारा के अग्रणी शहीद-ए-आजम भगत सिंह की 108वीं जयन्ती सम्मान पूर्वक मनायी गयी। कार्यक्रम की शुरूआत भगत सिंह की फोटो पर पुष्प अर्पित करने के साथ हुई।

दिल्ली : शहीद-ए-आजम भगतसिंह की जयंती पर एआईडीवाईओ की राज्य कमेटी द्वारा 27 सितम्बर को दिल्ली के रामपुरा क्षेत्र में 'एक शाम शहीदों के नाम' कार्यक्रम किया गया। इसमें क्रांतिकारी गीतों तथा 'पानी के रंग' नाटक की प्रस्तुति की गई। जनसभा को एआईडीवाईओ के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष कॉ. दीपक कुमार, दिल्ली राज्य सचिव प्रकाश देवी, कार्यालय सचिव प्रमोद यादव, रीतु असवाल, नीतू सैनी आदि ने सम्बोधित किया।

वक्ताओं ने कहा कि शहीद भगतसिंह का जीवन-संघर्ष आज नौजवानों के लिए दिशा है। शहीद भगतसिंह ने कहा था कि जब तक इन्सान के द्वारा इन्सान का शोषण खत्म नहीं होगा तब तक ये जंग जारी रहेगी। आजादी के इतने सालों बाद भी आम आदमी की हालत बद से बदतर होती जा रही है। रोजगार की तलाश में युवा दर-दर के ठोकरें खा रहा है। बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, नशाखोरी, अश्लीलता तथा महिलाओं पर अपराध की समस्याओं को दूर करने के बजाय सरकार इन्हें बढ़ावा दे रही है। पूंजीपतियों की सेवादार सरकार जनता को मूलभूत सुविधाओं से वंचित कर रही है जबकि पूंजीपतियों को अरबों-खरबों की छूट दे रही है। लोगों पर आर्थिक-राजनैतिक हमलों के साथ ही युवाओं में सांस्कृतिक पतन को भी बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि वे अपने अधिकारों के लिए लड़ न सकें। वे शहीदों को अपना आदर्श न मानें इसलिए पाठयक्रम से भी शहीदों का नामोनिशान मिटाया जा रहा है। ऐसे में इन शहीदों को याद करना, उनके आदर्शो को युवाओं के बीच ले जाना समय की मांग है। इस दिवस को मनाना केवल तभी सार्थक होगा तब हम इन शहीदों के सपनों का भारत बनाने का संकल्प लें।

सभा का संचालन अमरजीत ने किया तथा सभा की अध्यक्षता संगठन के राज्य अध्यक्ष राकेश कुमार ने की। सभा में दिल्ली के सैकड़ों नौजवानों ने भाग लिया।

करौंदी कलां सुलतानपुर : 28 सितम्बर को यहां महाकवि कालिदास आई.टी.आई. अमरेमऊ में कार्यक्रम में छात्राओं ने गीत प्रस्तुत किये। एआईडीवाईओ के राज्य सचिव कॉ. रवि शंकर मौर्य, ए.आई.डी.वाई.ओ. के सुलतानपुर जिला सचिव कॉ. विजयानन्द तिवारी, राम कुमार यादव, जयप्रकाश यादव, कृष्णकान्त निषाद, विकास सिंह, आदि ने बात रखी। कार्यक्रम में कॉलेज व आई.टी.आई. के छात्रों, अभिभावकों व नौजवानों ने भी हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन आई.टी.आई. कमेटी इंचार्ज मंगला प्रसाद निषाद ने किया तथा अध्यक्षता प्रधानाचार्य श्री समरनाथ शर्मा ने की।

रोहतक : शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती पर स्थानीय छोटूराम धर्मशाला में 27 सितम्बर को एआईडीएसओ, एआईडीवाईओ और एआईयूटीयूसी द्वारा की गई सभा की अध्यक्षता कॉ. सतीश कुमार ने की।

सभा के मुख्य वक्ता छात्र नेता, एआईडीएसओ के राज्य सचिव हरीश कुमार सैनी ने कहा कि भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारी शहीदों की याद को शासक वर्ग भुला देना चाहता है। जातिवाद, साम्प्रदायिकता, इलाकापरस्ती फैला कर वह मेहनतकश जनता में फूट डालने की कोशिश में है। शिक्षा और इलाज महंगा हो जाने से आम आदमी की पहुंच से बाहर होता जा रहा है। प्रचार माध्यमों के जरिये अश्लीलता, यौनता व हिंसा परोसी जा रही है, शराबखोरी, नशाखोरी, जुए व लाटरी को बढ़ावा दिया जा रहा है। छात्र-नौजवानों को नैतिक-सांस्कृतिक पतन की दलदल में धकेला जा रहा है। ऐसे संगीन हालात में शहीद भगत सिंह को याद करना, उनके जीवन-संघर्ष से सीख लेना और उनकी गौरव गाथा को जन-जन तक ले जाना बेहद प्रासंगिक हो गया है।

सभा को युवा नेता ओमबीर, मजदूर नेता जगदीश चन्द्र ने भी सम्बोधित किया। सभा का संचालन उमेश कुमार मौर्य ने किया। बच्चों ने प्रगतिशील गीत प्रस्तुत किये। सभा में भाजपा सरकार द्वारा दीनानाथ बत्रा की लिखी पुस्तकों को पाठ्यक्रम में लगाने की कड़ी निन्दा की गई। वक्ताओं ने कहा कि सरकार का यह कदम आजादी आन्दोलन के महान क्रान्तिकारी शहीद भगत सिंह व भारतीय नवजागरण के महान मनीषियों के विचारों के खिलाफ है।

भिवानी : शहीद भगत सिंह जयंती की पूर्वसंध्या के अवसर पर 27 सितम्बर को एआईडीवाईओ, एआईडीएसओ और एआईयूटीयूसी की ओर से स्थानीय नेहरू पार्क में जनसभा की गई। सभा की अध्यक्षता ऑल इण्डिया यूटीयूसी

सोनीपत

के जिला सचिव कॉ. धर्मवीर सिंह ने की और संचालन कोषाध्यक्ष कॉ. राजकुमार ने किया। सभा के मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) के जिला सचिव कॉ. रामफल ने शहीद भगत सिंह के जीवन-संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे अदम्य साहस, कुर्बानी, देशभक्ति, कर्तव्यपरायणता, सत्यनिष्ठा व धर्मनिरपेक्षता की शानदार व अनुकरणीय मिसाल पेश कर गये। वे आम लोगों, खासकर छात्र-नौजवानों के प्रेरणा स्रोत हैं। वे न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद की गुलामी की जंजीरों से देश को आजाद कराना चाहते थे, बल्कि शोषणहीन समाज भी बनाना चाहते थे। 15 अगस्त, 1947 को समझौते से आजादी मिली। अंग्रेज साम्राज्यवादियों की जगह भारतीय पूंजीपति राजसत्ता पर काबिज हुए। शासक-शोषक बदले लेकिन शोषण-जुल्म बदस्तूर जारी रहा। हर तरह के शोषण से मुक्ति का शहीद भगत सिंह का सपना आज भी अधूरा है। इन क्रान्तिकारियों की याद को शासक वर्ग जनमानस से भुला देना चाहता है ताकि उनके उनके जीवन-संघर्ष से प्रेरित होकर और सीख लेकर कोई पूँजीवादी

सुलतानपुर

शोषण-जुल्म के खिलाफ सीना तान कर उठ खड़ा न हो सके। शहीद भगत सिंह जयंती उनके जीवन-संघर्ष से सीख लेकर आज अपना फर्ज निभाने की शपथ लेने का दिन है।

डीएसओ के पवन कुमार और डीवाईओ के संदीप मेहरा ने हर शोषण-जुल्म के खिलाफ आवाज बुलंद करने के लिए छात्र-नौजवानों से आगे आने की अपील की। कॉ. सुखबीर सिंह व ममता ने भी बात रखी। स्कूली छात्रों ने प्रगतिशील जनवादी गाने प्रस्तुत किये। उद्धरण प्रदर्शनी भी लगाई गई। 27 सितम्बर की शाम को भिवानी जिला के तोशाम कस्बे में और 28 सितम्बर को छपार व दुल्हेड़ी में भी शहीद भगत सिंह जयंती मनायी गई।

जयपुर (राज) : 28 सितम्बर को एआईडीवाईओ -एआईडीएसओ की ओर से शहर के विभिन्न स्कूल-कॉलेजों में शहीद भगत सिंह जयंती सम्मान जनक ढंग से मनाई गई। सुबोध कॉलेज, महाराजा कॉलेज, महारानी कॉलेज, महात्मा ज्योतिराव फूले स्कूल में हुई सभाओं का संचालन एआईडीएसओ के सौरभ सिंह ने किया। एआईडीवाईओ जयपुर के प्रभारी कुलदीप सिंह ने भगत सिंह के विचारों और जीवन-संघर्ष पर प्रकाश डाला। टाइटन ट्यूड्स स्कूल में एसयूसीआई(सी) राज्य सचिव कॉ. रामदयाल मुख्य वक्ता थे। सभा का संचालन कॉ. नेतराम ने किया।

पिलानी : यहां बाजार पार्क में 28 सितम्बर को एआईडीवाईओ -एआईडीएसओ की ओर से शहीद भगत सिंह की याद में आयोजित कार्यक्रम में डीवाईओ के कॉ. शंकर दहिया ने बात रखी। झेरली गांव में भगत सिंह जयंती समारोह में मुख्य वक्ता डीवाई के कॉ. शंकर दहिया थे। राजू सिहाग, सचिन, दीपक वर्मा, दिलीप व कपिल आदि कई लोग सभा में शामिल थे।

वाराणसी (उ.प्र.) : 28 सितम्बर को शहीद भगत सिंह जयंती पर एआईडीवाईओ द्वारा शहीद उद्यान पार्क, सिगरा एवं छोटी गैबी मुहल्ले में शीतला मन्दिर के पास एक पुष्पांजली कार्यक्रम किया गया। इसमें कमलेश मौर्य, सुरेन्द्र यादव, सन्नी शर्मा, अजीत कुमार, राजा कन्नौजिया, नवीन, अभय कुमार पाण्डेय, अंकित मौर्य, अमन साहू, विकास कुमार आदि उपस्थित रहे।

दुर्ग (छ.ग.) : ए.आई.डी.एस.ओ. के द्वारा साईन्स कॉलेज दुर्ग में 28 सितम्बर को कॉलेज के गार्डन में शहीद-ए-आजम भगत सिंह के जीवन-संघर्ष व देश के आजादी आंदोलन में क्रांतिकारियों की भूमिका पर विचार गोष्ठी आयोजित की गई। आत्माराम साहू व अन्य वक्ताओं ने बात रखी और विद्यार्थियों को संगठित होकर जोरदार संघर्ष करने की जरूरत पर बल दिया। शिक्षकों व छात्र-छात्राओं को शहीद भगत सिंह का बैज पहनाया गया।

शाम को शहीद चौक, दुर्ग में ए.आई.डी.एस.ओ. दुर्ग जिला कमेटी द्वारा शहीद-ए-आजम भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, शहीद उधम सिंह की मूर्तियों पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजली दी गई। जहाँ कार्यकताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

श्रीनगर, गढ़वाल : 27 सितम्बर को उत्तरा खण्ड के श्रीनगर में एआईडीएसओ का प्रथम छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। प्रदेश में छात्र आन्दोलन गठित करने के एक 15 सदस्यीय कमेटी गठित की गई।

रोहतक, हरियाणा

पिलानी, राजस्थान

श्रीनगर, गढ़वाल

पश्चिमी एशिया की शरणार्थी त्रासदी..

(पृष्ठ 1 का शेष)

अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने इस क्षेत्र में अभूतपूर्व बर्बरता ढायी है। इसके अलावा, इन पश्चिमी एशियाई देशों के तेल व अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर अपनी पकड़ मजबूत बनाने की कोशिश में पेंटागन व उसके सहयोगी बलप्रयोग की धमकी देकर उनकी शर्तें मानने के लिए इन पश्चिमी एशियाई देशों को मजबूर करने, उन पर युद्ध थोपने और इस क्षेत्र में तनाव व डर-भय का मनोविकार बढ़ाने के साथ-साथ साम्राज्यवादियों की इन साजिशों और कातिलाना करतूतों के खिलाफ लोगों के संयुक्त प्रतिरोध की सम्भावना पर पानी फेर देने के प्रयास में वहां संकीर्ण, नस्लीय, राष्ट्रीय और धार्मिक भेदों की आग भी भड़काते आये हैं, शोषित-पीड़ित लोगों को भ्रातृघाती लड़ाई-झगड़ों में फंसाते आये हैं। इस प्रक्रिया में उन्होंने कुछ शैतान उन्मादी पैदा कर दिये हैं जो अब फिरौती वसूलने के लिए किसी को भी बंधक बना रहे हैं, केवल हिंसा ही नहीं, बल्कि बर्बरता भी ढा रहे हैं जो गहरे जंगल में बेहद खूंखार जानवरों के बीच पाई जाने वाली बर्बरता की भी सीमा लांघ जाती है।

अमेरिकी साम्राज्यवाद ने पहले अफगानिस्तान को बनाया निशाना

जैसा कि फिलहाल देखा जा रहा है शरणार्थियों की सबसे बड़ी संख्या युद्ध से तबाह सीरिया, अफगानिस्तान, लीबिया और दक्षिणी सूडान से पलायन कर रही है। जब से 1978 की सउर (अफगानों की भाषा दारी में दूसरा महीना) क्रान्ति हुई थी जिसने अफगानिस्तान में राजतंत्र को उखाड़ फेंका था, तभी से क्रान्ति को तबाह करने और उस देश को सोवियत प्रभाव, खासकर समाजवाद के प्रभाव से मुक्त करने के लिए अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने कुख्यात सीआईए को इस काम पर लगा दिया था और सउर क्रान्ति-विरोधी ताकतों और युद्ध सरदारों को 3 अरब से ज्यादा डालर मुहैया कराये थे। लोगों की बदहाली का उपजाऊ जमीन के तौर पर फायदा उठाते हुए पहले से मौजूद धार्मिक कट्टरपंथियों ने सिर उठा लिया और अपना दबदबा कायम कर लिया। 70 के दशक के अंत तक सीआईए और अमेरिकी साम्राज्यवादियों की प्रत्यक्ष और परोक्ष मदद से इस्लामिक कट्टरपथी गुटों का एक गठजोड़ मुजाहिदीन पैदा हुआ। अंततः जैसा कि सीआईए के अपने दस्तावेजों में कबूल किया गया है कि काबुल में सोवियत-परस्त हुकूमत के विरोधियों को 1979 में गुप्त अमेरिकी मदद दी जाने लगी। सीआईए और अमेरिकी साम्राज्यवादियों द्वारा एक-दूसरे के खिलाफ लड़ रहे बागी युद्ध सरदारों के साथ-साथ मुजाहिदीन के विभिन्न धड़ों को भड़काया जाता रहा, उन्हें हथियार, धन और सेटेलाइट टोह और खुफिया जानकारी मुहैया करायी जाती रही। इसके साथ ही साथ घोर प्रतिक्रियावादी, दकियानूसी चिन्तन और सोच पर आधारित और ओसामा बिन लादेन के नेतृत्वाधीन घोर इस्लामिक कट्टरपंथियों का जमावड़ा अल कायदा 1988 में पैदा किया गया जिसकी पूरी जानकारी अमेरिकी शासकों को थी, जो सऊदी अरब और अमेरिका से मिले धन से काम करते हुए सीआईए से घनिष्ट सम्बन्ध बनाये हुए था। इसने धर्म के नाम पर सभी तरह के प्रगतिशील विचारों का दमन किया और जिस किसी ने इसके विचारों की खिलाफत की, उसी का सफाया कर दिया। असल में अमेरिकी शासकों और सीआईए ने बेशर्मी से अफगानिस्तान में अपने सोवियत-विरोधी अभियान में तेजी लाने के लिए मुजाहिदीनों और अन्य कट्टरपंथी ताकतों के अलावा अल कायदा जैसी खतरनाक ताकत का इस्तेमाल किया। लेकिन बाद में युद्ध सरदारों के बीच भयंकर सत्ता-संघर्ष शुरू हो गया जिसने हजारों अफगानों को मौत के घाट उतार दिया, लाखों लोगों को नारकीय शरणार्थी कैम्पों में धकेल दिया, राजनैतिक अव्यवस्था पैदा कर दी और लाखों निर्वासितों की वतन वापसी पर रोक लगा दी। बाकी बचा देश स्थानीय निरंकुश युद्ध सरदारों के दबदबे वाली अलग-अलग जागीरों में बंट कर रह गया। ऐसी दयनीय अंधकारमय परिस्थिति में एक बार फिर अमेरिकी साम्राज्यवादियों के वरदहस्त, संरक्षण और मदद से 1994 में तालीबान मिलिशिया का प्रादुर्भाव हुआ। तालीबान के सुर और तौर-तरीके पूरी तरह अल कायदा के कट्टरपंथी सुर और दमनकारी तौर-तरीकों से मेल खाते थे। फिर एक बार जब तालीबान सत्ता में आ गये, इन दोनों दुर्दान्त कट्टरपंथी ताकतों ने अपने बीच पूर्ण सहमति कायम कर ली और किसी भी प्रकार की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जनवादी संगठनों व गतिविधियों को नकारते हुए और बेरहमी से बिना शर्त अपने शासन के प्रति अंध समर्पण की माँग करते हुए पूरे तालमेल के साथ काम करने लगी। बाद में जब अमेरिकी साम्राज्यवादियों के नेतृत्व में मुनाफाखोर, सत्तालोलुप साम्राज्यवादियों ने कट्टरपंथी, इस्लाम-विरोधी संकीर्ण यहूदीवादी इस्राइली शासन का इस्तेमाल करते हुए तेल और गैस से भरपूर भू-राजनैतिक दृष्टि से सामरिक महत्व के मध्य पूर्व के विभिन्न इस्लामिक देशों में तख्तापलट किया और फिलस्तीन सहित मध्य पूर्व के इन अरब देशों के खिलाफ क्रूर हमले तक शुरू कर दिये तो अमेरिकी साम्राज्यवादी साजिशों और हमलों के खिलाफ इन मुस्लिम-बहुल देशों के लोगों में तीव्र आवेग और आक्रोश बढ़ता गया। इस बढ़ते अमेरिकी साम्राज्यवाद-विरोधी आवेग को लपकते हुए एक समय अमेरिकी शासकों द्वारा पैदा किये गये अल कायदा ने सामने आना चाहा और भस्मासुर बन गया। अल कायदा आतंकवाद को काबू करने के नाम पर अमेरिका ने अफगानिस्तान पर फौजी हमला कर दिया। पहले से ही युद्ध-ध्वस्त व आर्थिक तौर पर चूर चूर हो चुके देश को तबाह कर दिया और वस्तुतः असहाय अफगानों पर क्रूर हिंस्रक हमला बोल दिया। दिखावे के तौर पर उन्होंने अफगानिस्तान में एक कठपुतली हुकूमत बिठा दी और अपनी फौज की तैनाती को लगातार बढ़ाते रहे और आज तक भी हमले जारी हैं। अमेरिकी साम्राज्यवादी ही हैं जो एक के बाद एक देशों में बदतरीन किस्म का आतंकवाद लगातार प्रसारित करते जा रहे हैं, ये ही हैं जिन्होंने रूढ़िवादी ताकतों को पाला-पोसा और संरक्षण दिया और फिर ये अमेरिकी साम्राज्यवादी ही हैं जो आतंक का मुकाबला करने का नाम लेकर उस देश पर क्रूर हमले कर रहे हैं।

इराक, लीबिया, सुडान, सीरिया थे अगला निशाना

अफगानिस्तान के बाद इराक की बारी थी। यह उल्लेखनीय है कि सद्दाम के शासनकाल में इराक ज्यादातर रूढ़िवादी प्रभाव या धार्मिक बंटवारे से मुक्त था। सद्दाम हुसैन के पास जनसंहारक हथियार होने का झूठा बहाना बना कर इराक पर हमला करने और अवैध कब्जा करने के अलावा, कब्जे के बाद अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने अब तक सत्ता में रहे सुन्नियों के खिलाफ शाशित शिया समुदाय की भावनाओं को भड़काते हुए इराकियों के बीच फूट डालने की कोशिश की और आखिरकार जनतंत्र कायम करने के नाम पर शिया-बहुल ताबेदार सरकार को गद्दी पर बिठाने में कामयाब हुए। इराक में कामयाबी मिलने के बाद पूरे अरब लोगों को बांट कर रखने के लिए वे शिया-सुन्नी विभाजन को भड़काते रहे और बढ़ाते रहे तथा इस्लामिक रूढ़िवाद के विभिन्न ब्रांडों को भी हवा देते रहे।

अगला निशाना लीबिया था। इसी तरह का दृढ़ अमेरिकी साम्राज्यवाद-विरोधी स्टैण्ड लेने वाले एक अन्य अरब देश लीबिया के अगले मामले में इस इराक के तुजुर्बे ने अमेरिकी साम्राज्यवादियों और इसके नाटो सहयोगियों को अपनी रणनीति बदलने के लिए प्रेरित किया। अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने लीबिया को ध्वस्त कर दिया और इसके राष्ट्रपति गद्दाफी की हत्या कर दी। सात महीने की अमेरिकी-नाटो बमबारी ने एक आधुनिक देश के पूरे बुनियादी ढांचे को तबाह कर दिया जहां तेल के राष्ट्रीयकरण ने अफ्रीका में जीवन का सर्वोच्च स्तर हासिल करने में मदद की थी। 20 लाख लीबियाइयों यानी नाटो हमले से पहले की लीबिया की एक तिहाई आबादी ने पड़ोसी देश ट्यूनिशिया में शरण ली। फिर इन लालची भेड़ियों ने सुडान के राष्ट्रपति उमर हसन अल बशीर के खिलाफ अपनी बंदूकें तान दी जिन्होंने उनके सामने अपने घुटने टेकने से इनकार कर दिया था। युद्ध अपराधों और मानवजाति के खिलाफ अपराधों के झूठे आरोप लगाकर साजिशाना ढंग से उन्हें फंसाया गया। विभिन्न प्रजातीय समूहों के बीच सुनियोजित ढंग से अविश्वास, उग्र राष्ट्रीयता और फूट को उकसाया और उन्हें खूरेजी में उलझा दिया, देश को अस्थिर कर दिया और आखिरकार उस देश को दो भागों में बांटने में कामयाब हुए। इस तरह उन्होंने सुडान के तेल से भरपूर क्षेत्रों पर कब्जा जमा लिया।

अब असद के सीरिया की बारी थी जहां अमेरिकी मदद प्राप्त तथाकथित 'फ्री सीरियन आर्मी' (एफएसए), अल कायदा के तत्व और मुख्यतः सुन्नी रूढ़िवाद पर टिके अन्य ग्रुपों ने असद को हटाने के लिए हाथ मिला लिये। अमेरिकी साम्राज्यवादियों के उकसावे और मदद से धार्मिक नेताओं और अमेरिका के दोस्ताना सऊदी अरब व कतर के रूढ़िवादी शेखों ने भी 'अनधिकृत' असद सरकार के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दिया और सीरियाई युवकों से आग्रह किया कि वे सीरिया को दूसरे अफगानिस्तान में तब्दील कर दें। लेकिन अब तक अमेरिकी साम्राज्यवादी अपने मिशन में कामयाब नहीं हुए हैं।

आईएसआईएस का जन्म

लेकिन इसी दौरान एक ही क्षेत्र के अन्दर सम्प्रदायों पर आधारित लोगों के बीच फूट डालने की अमेरिकी नीति का एक और महत्वपूर्ण परिणाम हुआ। शियावादी साम्प्रदायिकता ने केवल सुन्नी जागरूकता आन्दोलन को ही नहीं भड़काया बल्कि आईएसआईएस की चरमपंथी और घातक कट्टरपंथी सुन्नी मिलिशिया के आविर्भाव की जमीन तैयार कर दी जो अल कायदा की एक इराकी प्रशाखा के रूप में शुरू हुई थी। शुरूआत में इराक केन्द्रित और इस्लामिक स्टेट आफ इराक (आईएसआईएस) के रूप में जानी जाने वाली आईएसआईएस ने बहुत सालों पहले छिड़े देश के गृहयुद्ध में अमेरिकी मदद प्राप्त असद-विरोधी बागी ताकतों के साथ शामिल होकर सीरिया के लिए अपने नाम के आगे दूसरा एस और जोड़ लिया था। सऊदी अरब, कतर, संयुक्त अरब अमीरात और खाड़ी के अन्य देशों के तमाम अमेरिका-परस्त राजतंत्र आईएसआईएस के सैद्धान्तिक अंतरंग मित्र रहे हैं और आईएसआईएस को दरियादिली के साथ धन और हथियार मुहैया कराते रहे हैं। उदाहरण के लिए अमेरिकी उप राष्ट्रपति जो बिदेन ने पिछले साल स्वीकार किया कि सऊदी अरब, यूएई, कतर और तुर्की ने सीरिया में इस्लामिक बागियों को लाखों करोड़ डालर मुहैया कराये हैं जो आईएसआईएस में तब्दील हो गये। हाल ही में मीडिया में आया है कि इसके साक्ष्य और सबूत हैं कि अमेरिका आईएसआईएस की मदद कर रहा है। गत दिसम्बर में इराकी संसदीय सुरक्षा और रक्षा कमिशनर एम पी मजीद अल धराबी ने कहा कि उपलब्ध सूचना इंगित करती है कि अमेरिकी विमान आईएसआईएस को हथियार और गोला बारूद सप्लाई कर रहे हैं। जनहित-कानून विषयक अमेरिकी संस्था जुडिशियल वाच द्वारा हासिल किया गया एक डिक्लासिफाइड गुप्त अमेरिकी दस्तावेज दर्शाता है कि अल कायदा और अन्य इस्लामिक चरमपंथी गुटों के साथ हाथ मिलाये हुई पश्चिमी सरकारें जानबूझकर सीरियाई राष्ट्रपति का तख्ता पलटने के लिए इस पूर्वानुमान के बावजूद मदद पहुँचा रही हैं कि ऐसा करने से आईएसआईएस का प्रादुर्भाव होगा। पेंटागन ने अनुमान लगा लिया था कि इस रणनीति के सीधे परिणाम के रूप में 'इस्लामिक स्टेट' के उभरने की सम्भावना है लेकिन दस्तावेज खुलासा करता है कि 'सीरियाई हुकूमत को अलग-थलग करने' के लिए एक रणनीतिक अवसर के रूप में इस परिणाम की व्याख्या की गई है। इस प्रकार यह दस्तावेज विशेष रूप से पुष्टि करता है कि फिलहाल अमेरिका-नीत गठजोड़ जो आईएसआईएस से लड़ने का आभास दे रहा है इसी ने तीन साल पहले असद को कमजोर करने के रास्ते के तौर पर क्षेत्र में चरमपंथी ''सलाफिस्ट प्रिंसीपलिटी'' के प्रादुर्भाव का स्वागत किया था। इस्राइली रक्षा मंत्री मोशे इयालोन ने भी पुष्टि की है कि अमेरिकी समर्थन प्राप्त सीरियाई बागियों को इस्राइल मदद देता रहा है। मीडिया में उद्धृत एक अन्य सूत्र ने आशंका जतायी है कि जर्मनी जैसी यूरोपीय महाशक्तियाँ भी बिचौलियों के जरिये और कुछ

(शेष पृष्ठ 7 पर)

दुर्ग जिला छात्र सम्मेलन का सफल आयोजन

दुर्ग(छ.ग.) : बंद किये सभी सरकारी स्कूल पुन: खोलने, पास-फेल प्रणाली व 5वीं-8वीं बोर्ड परीक्षा पुन: लागू करने आदि माँगों पर व शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण-साम्प्रदायीकरण के खिलाफ 1 अक्टूबर को ऑल इंडिया डेमाक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीएसओ) द्वारा यहाँ दुर्ग जिला छात्र सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। छात्र सम्मेलन की शुरूआत डीएसओ के महासचिव कॉ. अशोक मिश्रा व कार्यकर्ताओं के द्वारा शहीद वेदी पर माल्यार्पण कर आजादी आंदोलन के महान क्रांतिकारियों को श्रद्धांजली देते हुए की गई। तत्पश्चात छात्र सम्मेलन का मूल प्रस्ताव और महिलाओं व छात्राओं पर हो रहे अत्याचार, शोषण के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया गया और इस पर डेलिगेटों द्वारा विस्तृत चर्चा व समर्थन किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित ए.आई.डी.एस.ओ. अखिल भारतीय महासचिव कॉ. अशोक मिश्रा ने छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि पूरे देश में तमाम सरकारों ने आजादी के बाद से ही लगातार शिक्षा में तरह-तरह की नीतियां लागू कर इसे खरीद-फरोख्त की वस्तु में तब्दील कर दिया है। इसके चलते गरीब मध्यम वर्ग के छात्रों के लिए शिक्षा प्राप्ति का रास्ता बंद होता जा रहा है। सिर्फ शिक्षा ही नहीं, बल्कि ये सरकारें हमारे जीवन के सभी पहलुओं पर हमला कर रही हैं। भाजपा एक तरफ, रोजगारपरक, स्किल ओरियेंटिड शिक्षा लाकर वैज्ञानिक, मनुष्य व चरित्र निर्माणकारी शिक्षा को ध्वस्त कर देना चाहती है, वहीं दूसरी तरफ धर्मनिरपेक्ष शिक्षा को खत्म करके अंधविश्वासों व आध्यात्मिक चिंतन पर आधारित शिक्षा लाना चाहती है। महान मार्क्सवादी चिंतनकार कॉमरेड शिवदास घोष ने बहुत पहले ही दिखाया था कि फासीवाद अध्यात्मवाद के साथ विज्ञान के तकनीकी पहलुओं का एक खास समिश्रण है। भाजपा सरकार ऐसी ही एक

छात्र सम्मेलन में भाग लेते हुए प्रतिनिधिगण

फासीवादी संस्कृति पैदा करना चाहती है। इन सभी समस्याओं के समाधान का एकमात्र रास्ता है-छात्रों, युवाओं, शिक्षकों, अभिभावकों का सम्मिलित संगठित जोरदार आंदोलन। उन्होंने छात्र-छात्राओं से आह्वान किया कि शिक्षा व मानवता को बचाने के लिए जोरदार छात्र आंदोलन निर्मित करें। मुख्य अतिथि एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के दुर्ग जिला इंचार्ज कॉ. विश्वजीत हारोडे व डीएसओ राज्य संयोजक कॉ. आत्मा राम साहू ने भी छात्रों को संबोधित किया एवं नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई दी। अंत में नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने दुर्ग जिले की समस्याओं को लेकर भावी आन्दोलन की रूपरेखा तैयार की।

कार्यक्रम का संचालन व अध्यक्षता पूर्व जिला अध्यक्ष जतिन साहू ने की। इस सम्मेलन में कई स्कूल-कॉलेजों के 100 से अधिक छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम में ए.आई.डी.एस.ओ. दुर्ग जिला कमेटी का गठन किया गया जिसमें अध्यक्ष- नीतू साहू, उपाध्यक्ष- भूनेश्वरी साहू सचिव- प्रवीण शर्मा सहित 28 सदस्यों की जिला काउन्सिल बनायी गई।

एआईडीएसओ का हैदराबाद जिला सम्मेलन

एआईडीएसओ के हैदराबाद जिला सम्मेलन में केन्द्र और राज्य सरकार की जनविरोधी शिक्षा नीति के खिलाफ आन्दोलन का आह्वान किया गया। 23-24 सितम्बर को हुए इस सम्मेलन का उद्घाटन सुपरिचित कवि हिमाजवाला ने किया। एसयूसीआई(सी) के हैदराबाद जिला सचिव कॉमरेड सी.एच. मुराहरि और राज्य सचिव कॉमरेड के. श्रीधर सम्मेलन में मौजूद थे। कॉमरेड जे. मल्लेश राज को अध्यक्ष, कॉमरेड सत्यनारायण को सचिव चुनते हुए जिला कमेटी का गठन किया गया।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कॉ. सी.एच. मुराहरि

शिखर पर बेरोजगारी : चपरासी की नौकरी के लिए आवेदन करने वालों में बी.टैक., एम.ए., पी.एच.डी. शामिल

पूँजीवादी भारत में बेरोजगारी का विकराल रूप एक बार फिर नग्न रूप से सामने आया है जब छत्तीसगढ़ सरकार के डायरेक्टर ऑफ इकॉनोमिक्स एण्ड स्टेस्टिटिस्क में चपरासी के 30 पदों के लिए 75000 आवेदन पत्र प्राप्त हुए। हालांकि पात्रता का मानदण्ड 5वीं कक्षा तक शिक्षित होना था लेकिन अनेकों इंजीनियरों, विज्ञान तथा कला में स्नातकोत्तरों ने भी चपरासी के लिए आवेदन किया। आवेदनों की आई अनपेक्षित बाढ़ से अधिकारी इतने हतप्रभ हो गए कि गत 30 अगस्त को होने वाली परीक्षा को रद्द करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकार राज्य सचिवालय में चपरासी के पद के लिए 10 साल बाद वैकेंसी निकाली गई तो महज 33 दिन के दौरान ही अर्जियों की बाढ़ आ गई। उत्तर प्रदेश में चतुर्थ वर्गीय स्टाफ चपरासी के 368 पदों के लिए प्राप्त हुए आवेदन 23 लाख का आंकड़ा पार कर गए। आवेदकों में 2 लाख 22 हजार से ज्यादा बी.टैक, बी.एस.सी., बी.कॉम., एम.एस.सी., बी.एड., बी.ए. पास-ग्रेजुएट और एमए हैं, 255 पी.एच.डी. हासिल कर चुके हैं। ऐसी प्रतिक्रिया देख कर भर्ती कवायद की देखरेख कर रहे अधिकारियों के होश उड़ गये। बेरोजगारी के संकट ने चपरासियों के पद के लिएं आवेदन करने के लिए पीएचडी, एमएससी और बी.टैक योग्यता प्राप्त उम्मीदवारों को भी मजबूर कर दिया। इससे पहले भी 1400 लेखपाल पदों के लिए 27 लाख से अधिक आवेदन आये थे। (स्रोत: द लॉजिकल इण्डियन दिनाँक 27 अगस्त 2015, दैनिक भास्कर दिनांक 16 सितम्बर 2015 एवं डी.एन.ए. दिनांक 11 सितम्बर 2015)

आईटीआई छात्रों की विभिन्न माँगों को लेकर

कन्वेन्शन व विक्षोभ प्रदर्शन

नागपुर (महाराष्ट्र) : आईटीआई में 2013 से लागू की गई सेमेस्टर प्रणाली के खिलाफ अब छात्रों में धीरे-धीरे रोष बढ़ता जा रहा है। सेमेस्टर के कारण प्रशिक्षण समय वास्तव में बहुत कम रह गया है। वहीं दूसरी तरफ नेगेटिव मार्किंग के कारण ज्यादातर छात्रों का रिजल्ट खराब आ रहा है। रिजल्ट निर्धारित समय पर नहीं आता है जिससे छात्रों का समय बर्बाद हो रहा है। छात्र अप्रेन्टिसशिप की सुविधा से वंचित रह जाते हैं। आईटीआई पास करने पर भी नौकरी की कोई गारंटी नहीं है और उद्योगों में ठेका प्रथा चालू होने से स्थायी रोजगार नहीं मिलता है। इसके अलावा आईटीआई संस्थानों में बुनियादी सुविधाओं का भी नितांत अभाव है। नागपुर की आईटीआई में जहाँ लगभग 1500 छात्र प्रशिक्षण लेते हैं, पीने के पानी के लिए भी भटकना पड़ता है। 21 वास रूमों में से केवल एक ही इस्तेमाल करने लायक है। स्टाइफण्ड समय पर नहीं मिलता है।

इन सब समस्याओं को लेकर 16 सितम्बर को राष्ट्र भाषा भवन में एआईडीएसओ द्वारा छात्र कन्वेन्शन आयोजित किया गया। इसके बाद वहाँ से विधान भवन तक विक्षोभ प्रदर्शन किया गया। एआईडीएसओ के ऑल इण्डिया कार्यकारिणी सदस्य विश्वजीत हारोडे वक्ता थे। बाद में एक शिष्टमण्डल ने आईटीआई सहसंचालक को माँगों का एक ज्ञापन सौंपा। शिष्टमण्डल में माधुरी निकुरे, विश्वजीत हारोडे, माधुरी पवार, अभिषेक नागमोते और ममता काकड़े आदि शामिल थे।

डेंगू की रोकथाम की मांग पर प्रदर्शन

27 सितम्बर को एसयूसीआई(सी) दिल्ली-गाजियाबाद बॉर्डर लोकल कमेटी ने सीमापुरी क्षेत्र के विधायक को डेंगू की रोकथाम हेतु तुरन्त फोगिंग कराने व निजी अस्पतालों में भी डेंगू की नि:शुल्क जांच और इलाज कराने के लिए ज्ञापन दिया। विधायक महोदय ने ज्ञापन लेने के साथ-साथ प्रतिनिधिमण्डल को आश्वस्त किया कि वे ज्ञापन में उठाई गई मांगों पर तुरन्त समुचित कदम उठाएंगे। बृज विहार (गाजियाबाद) क्षेत्र के नगर निगम पार्षद को डेंगू की रोकथाम व इसके समुचित इलाज के पुख्ता इंतजाम कराने के लिए ज्ञापन सौंपा गया।

सीमापुरी में प्रदर्शन करते हुए एसयूसीआई(सी) के कार्यकर्ता

डेंगू की रोकथाम की मांग को लेकर दिल्ली आईटीओ पर प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए कॉ. प्राण शर्मा

कुलपति को सौंपा मांगों का ज्ञापन

जमशेदपुर (झारखण्ड) : 1 अक्तूबर को एआईडीएसओ के एक प्रतिनिधिमण्डल ने कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलपति को सीटें बढ़ा कर सबको नामांकन, सभी संकायों में शिक्षकों की नियुक्ति, आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ व व्यवस्थित करने, घाटशिला महाविद्यालय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूर्व की तरह सभी विषयों में अविलम्ब चालू करने व पी जी में यथानुसार पठन-पाठन आदि माँगों का एक ज्ञापन सौंपा।

प्रतिनिधिमण्डल में डोमन महतो, पूर्णिमा टुडु, रमेश बनसरियर, शकुंतला टुडु, हेमलता, सिमंतो बारीक, अशांत श्रीवास्तव, संजय श्रीवास्तव, पतित पावन कुइला, हेमंत महाली एवं विष्णु देव गिरि शामिल थे।

आजादी आन्दोलन की प्रथम महिला क्रान्तिकारी शहीद प्रीतिलता वाद्देदार के शहादत दिवस पर हुए कार्यक्रम

सीमापुरी, दिल्ली

बृज विहार, गाजियाबाद

दिल्ली : ऑल इण्डिया एम.एस.एस., ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. तथा ऑल इण्डिया एस.ई.सी. द्वारा दिल्ली के विभिन्न इलाकों में देश की प्रथम महिला शहीद प्रीतिलता वाद्देदार का शहादत दिवस सम्मानपूर्वक मनाया गया। सभी जगह कार्यक्रम की शुरूआत क्रान्तिकारी गीतों से हुई। सीमापुरी में कॉ. सीता सिंह, सोनिया विहार में दिल्ली राज्य सचिव कॉ. रितु कौशिक, पुष्पा चमोली तथा अर्चना शर्मा, गुलाबी बाग में कॉ. आशारानी, कॉ. प्रशांत कुमार, कॉ. सोनी एवं कॉ. मौसम, बुराड़ी में कॉ. मैनेजर चौरसिया, कॉ. नरेन्द्र शर्मा, कॉ. आशारानी, संजय कॉलोनी में कॉ. रितु कौशिक तथा चित्रा, विवेकानन्द कॉलेज में कॉ. रितु एवं श्रेया ने अपना वक्तव्य रखा। सेव ऐजुकेशन कमेटी, दिल्ली राज्य सचिव जी.एस. सिंह ने भी सीमापुरी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। सभी जगह प्रीतिलता वाद्देदार के जीवन के विभिन्न पहलुओं एवं जीवन-संघर्ष पर वक्तव्य रखा गया।

लक्ष्मीबाई नगर कॉलोनी में प्रीतिलता वाद्देदार के शहादत दिवस एवं नवजागरण काल के महान मनीषी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जयंती पर सभा में एमएसएस की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. रितु कौशिक ने कहा कि क्रान्तिकारियों व मनीषियों के विचारों, जीवन-संघर्षो एवं बलिदान को न केवल पाठ्यक्रम से हटाया जा रहा है बल्कि लोगों के जेहन से ही मिटाने की कोशिश की जा रही है ताकि देश के छात्र-नौजवान एवं महिलाएं अन्याय, अत्याचार, शोषण एवं जुल्मों के खिलाफ संठित होकर आन्दोलन न कर सकें। सरकार की इस घृणित मंशा को भी उन्होंने उजागर किया। उन्होंने आगे कहा कि जिस तरह सूरज को छिपाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है, उसी तरह इन महान विभूतियों के विचारों को भी छिपाया नहीं जा सकता। आज के समय में इन विचारों और आदर्शो की प्रासंगिकता को दर्शाते हुए कार्यकर्ताओं को नैतिक एवं महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाने का उन्होंने आह्वान किया।

कार्यक्रम के अंत में एमएसएस राज्य अध्यक्षा सुबोध शर्मा व एडवोकेट दीपिका जैन ने भी अपना वक्तव्य रखा।

ऑल इण्डिया सेव एजुकेशन कमेटी की दिल्ली राज्य कमेटी की ओर से सीमापुरी क्षेत्र में 27 सितम्बर को महान मनीषी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की जयंती वैज्ञानिक, धर्मनिरपेक्ष व जनवादी शिक्षा दिवस के रूप में मनायी गई। इस कार्यक्रम में कई लोगों ने हिस्सा लिया। सभा का संचालन राहुल शर्मा ने किया। सभा की शुरूआत में श्रेया सिंह ने क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किये। कमेटी के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. जी.एस. सिंह सभा में मुख्य वक्ता थे। इस अवसर पर रवि कुमार एवं आर. के. भट्ट ने भी सभा को सम्बोधित किया। शहीद प्रीतिलता वाद्देदार तथा शहीद-ए-आजम भगत सिंह को याद करते हुए इनके विचारों तथा जीवन-संघर्षो से सीख लेने की अपील की गई।

ऑल इण्डिया सेव एजुकेशन कमेटी की गाजियाबाद इकाई की ओर से 26 सितम्बर को महान मनीषी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की जयंती की पूर्व संध्या पर इस दिन को वैज्ञानिक, धर्मनिरपेक्ष व जनवादी शिक्षा दिवस के रूप में मनाया गया। इस कार्यक्रम में सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया। सभा का संचालन कॉ. राहुल शर्मा ने किया। सभा की शुरूआत क्रान्तिकारी गीतों से की गई। कमेटी के दिल्ली राज्य सचिव जी.एस. सिंह सभा में मुख्य वक्ता थे। इस अवसर पर प्रभाष और सीता सिंह ने भी सभा को सम्बोधित किया।

इलाहाबाद (उ.प.) : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम क्रान्तिकारी महिला शहीद प्रीतिलता वादेदार के 83वें शहादत दिवस के अवसर पर यहां ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) के द्वारा 27 सितंबर को एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विषय था - 'शहीद प्रीतिलता और आज की महिलाओं की दशा एवं दिशा'। इसमें महिलाओं ने बहुत उत्साहपूर्वक भाग लिया। गोष्ठी का प्रारम्भ प्रियंका एवं उत्तरा ने 'हिम्मत से काम ले, डरना कैसा?' जैसे जोशीले गीत गाकर किया। सबसे पहले कॉमरेड रश्मि मालवीय ने स्वाधीनता आन्दोलन की क्रान्तिकारी धारा में महिलाओं की गौरवशाली परम्परा का परिचय देते हुए, उनके साहस त्याग, जुझारूपन और देशप्रेम की चर्चा की। कॉ. ज्ञानशीला शर्मा ने प्रीतिलता के जीवन परिचय सहित उनके वीरतापूर्ण संघर्ष के बारे में विस्तार से बताया। कल्याणी रायचौधरी ने प्रीतिलता के द्वारा अपनी मां के नाम लिखे गये अन्तिम पत्र को तथा तथा मास्टर सूर्यसेन द्वारा प्रीतिलता की शहादत के बाद लिखे गये पत्र को बहुत ही मार्मिक ढंग से पढ़ कर सुनाया।

कॉ. उत्तरा सिंह ने राजनीतिज्ञों और नेताओं के स्त्री-सम्बन्धी विचारों के बारे में चर्चा की। कॉ. संध्या मिश्रा ने कहा कि जब हमारे नेताओं, न्यायालयों, पुलिस, अधिकारियों, प्रशासन, व्यवस्था सभी की सोच स्त्री-विरोधी है और पूरी तरह पूंजीवादी और सामंती दृष्टिकोण से संचालित हो रही है, तो इस व्यवस्था में स्त्री को कोई भी सम्मान मिलना संभव नहीं है। इसलिये उसको अपने सम्मान की लड़ाई लड़ने और अपने हक को पाने के लिये खुद ही आगे आना होगा। इसके लिये उसे महिलाओं को जागरूक और संगठित करना होगा। कार्यक्रम का संचालन कॉ. रश्मि मालवीय ने किया।

पखान्जूर में मनाई गई विद्यासागर व शरतचन्द्र जयंती

जागृति मंच पंखान्जूर जिला कांकेर में 27 सितम्बर को भारतीय नवजागरण के महान मनीषियों विद्यासागर व शरतचन्द्र की जयंती पूरे सम्मान से मनाई गई। कार्यक्रम की शुरूआत में विद्यासागर व शरतचन्द्र के फोटो पर माल्यार्पण किया गया।

इस अवसर पर हमारी प्रिय पार्टी एसयूसीआई(सी) के केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉ. गोपाल कुण्डू ने विद्यासागर व शरतचन्द्र के जीवन संघर्षो पर विस्तृत वक्तव्य रखा। उन्होंन कहा कि हमारे देश में धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद और वैज्ञानिक सोच के प्रणेता विद्यासागर थे। जहाँ हमारे देश में कुसंस्कार, कुप्रथा, अंधविश्वास मौजूद था। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने बाल विवाह, बहुविवाह प्रथा को बंद करने के लिए जोरदार संघर्ष किया और विधवा विवाह, बालिका शिक्षा शुरू करायी।

महान साहित्यकार शरतचन्द ने विद्यासागर के विचारों को लेकर साहित्य के माध्यम से नीति-नैतिकता को ऊपर उठाया। कार्यक्रम में आलोक शर्मा, सांवीदलाल दास ने भी अपने विचार रखे। श्री गोपीनाथ मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में अध्यक्ष श्री सुदर्शन मंडल रहे। इस सभा में पखान्जूर सहित काफी संख्या में कई गांवों के लोग उपस्थित थे। संचालन सुब्रत साना ने किया और रूपरेखा निवास अधिकारी के द्वारा रखी गई।

कॉ. माणिक मुखर्जी का भाषण ...

(पृष्ठ 2 का शेष)

है? उद्देश्य है जनता को आन्दोलन में शामिल कराना, उनको संगठित करना और उनकी संघर्षशील पहलकदमी को आगे बढ़ाना। निश्चित ही नेतृत्व पार्टियों द्वारा प्रदान किया जाएगा। इन कमेटियों को सक्रिय बनाने, उन्हें संघर्ष के असल हथियार में परिणत करने में विभिन्न पार्टियों की भूमिका का भी लोग अवलोकन करेंगे। और जैसा कि कॉमरेड शिवदास घोष सहित महान कम्युनिस्ट अथोरटियों द्वारा सिखाया गया है यह सुनिश्चित करना एक असल क्रान्तिकारी पार्टी का दायित्व बनता है कि संयुक्त मोर्चे को एकता-संघर्ष-एकता के सिद्धांत के आधार पर संचालित किया जाए। कॉमरेड घोष ने व्याख्या सहित बताया है कि एक स्वीकृत साझे न्यूनतम कार्यक्रम और आचरण विधि के आधार पर साझे दुश्मन के खिलाफ संयुक्त संघर्ष संचालित करने के साथ साथ क्रान्तिकारी पार्टी को इस एकता के अन्दर विभिन्न घटक पार्टियों के बीच सैद्धांतिक मतभेदों को सुलझाने के लिए एक गहन वैचारिक संघर्ष छेड़ना चाहिए। उन्होंने दिखाया कि ये मतभेद संयुक्त आन्दोलन के संचालन के ढंग में, विभिन्न रण-कौशलगत सवालों के समाधान में, संयुक्त संघर्ष की उठा-पटक में उजागर होंगे और इस तरह मोर्चे की एकता कमजोर होने की बजाय मजबूत होगी। संयुक्त मोर्चा आन्दोलन के तीव्रतर होने की प्रक्रिया में क्रान्ति के लिए निहायत जरूरी वर्ग ध्रुवीकरण धीरे-धीरे उभरेगा और सही क्रान्तिकारी पार्टी को पहचानने में लोगों को सक्षम बना देगा। इसलिए, कॉमरेड्स संयुक्त मोर्चे की जरूरत यही है। क्रान्तिकारी पार्टी के लिए यह मजबूरी कतई नहीं है बल्कि जन संघर्षों को गति प्रदान करने के लिए इसकी जरूरत है। यही वजह है कि हम चुनाव लड़ने के उद्देश्य से नहीं बल्कि वर्ग-संघर्ष और जन संघर्षों को तीव्रतर करने के लिए अपनी पूरी ताकत के साथ वाम-जनवादी ताकतों का गठजोड़ विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं।

कॉमरेड्स मैने बहुत से बिन्दु आप लोगों के सामने रखे हैं। अंततः मैं जोर देकर कहना चाहूँगा कि भविष्य हमारा है क्योंकि हम सत्य पर खड़े हैं। भारत की सरजमीं पर हमारी पार्टी ही असल कम्युनिस्ट पार्टी है। आज हमारी पार्टी कोई छोटी पार्टी नहीं है। देश के लगभग तमाम राज्यों में हमारा संगठन फैला हुआ है। मार्क्सवाद और जुझारू वामपंथ का झण्डा ऊँचा उठाए हुए हम ताकतवर हो रहे हैं। बहुत से कॉमरेड बहुत सारे होल टाइमर्स, बहुत सारे युवा और होनहार कॉमरेड क्रान्ति के प्रति समर्पित हैं। बहुत से सैण्टर हैं जहाँ हमारे कॉमरेड सामूहिक जीवन बिता रहे हैं, क्रान्ति को नेतृत्व देने के लिए सच्चे कम्युनिस्ट के रूप में विकसित होने का प्रयास कर रहे हैं। जनता के बीच जाइए। लोगों को अपने साथ मिलाइए। कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन जो आज मार्क्सवाद-लेनिनवाद की अति समृद्ध और विकसित समझदारी है, के आधार पर जन आन्दोलन और वर्ग संघर्ष गठित करिए। पूरी गंभीरता के साथ कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन को लोगों के पास ले जाइए। कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तन को पनपाइए, जीवन के सभी क्षेत्रों में इसे लागू करिए, उनकी शिक्षाओं के सार को आत्मसात करिए। वर्ग संघर्ष और जन संघर्षों को निर्मित, विकसित और तीव्रतर करने की प्रक्रिया में छद्म-मार्क्सवादियों और अन्य समझौतापरस्त ताकतों को बेनकाब और अलग-थलग कर दीजिए। हमारा लक्ष्य है भारत में पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति सफल करना, सर्वहारा के अधिनायकत्व के तहत समाजवाद स्थापित करना और मानव द्वारा मानव के शोषण से समाज को मुक्त करना। और छोटी सी कालवधि में हम अपने वांछित लक्ष्य को हासिल कर सकेंगे। कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन के आधार पर ही भारतीय क्रान्ति विजयी होगी।

इन शब्दों और अपील के साथ में अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

भारतीय क्रान्ति जिन्दाबाद
मार्क्सवाद-लेनिनवाद जिन्दाबाद!
कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तन जिन्दाबाद!!
कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!!!

पश्चिमी एशिया की शरणार्थी त्रासदी..

(पृष्ठ 4 का शेष)

अरब देशों के जरिये जो उनके शस्त्र व्यवसाय के ग्राहक हैं आईएसआईएस को हथियार बेच रही हैं। इसके अलावा और कुछ हो भी नहीं सकता है। आईएसआईएस के पास कोई हथियारों का कारखाना नहीं है और न ही उनके पास कोई इलाका है। अगर साम्राज्यवादी शस्त्र व्यापारी उन्हें ये हथियार मुहैया नहीं कराते हैं तो कैसे वे इतने सारे आधुनिक हथियार रखे हुए हैं? वे कब्जाये गये तेल क्षेत्रों से तेल बेच कर जुटाये गये धन से भी हथियार खरीद रहे हैं। इसलिए एक बात की पुष्टि हो गई है कि आईएसआईएस या अन्य रूढ़िवादी ताकतें जो विकराल रूप से पैशाचिक, पाश्विक रूप से प्रतिक्रियावादी, नजरिये में अमानवीय, क्रोधोन्मत्त, क्रूरतापूर्वक स्त्री-द्वेषी और महिलाओं के प्रति अति निर्दयी, प्रचण्ड साम्प्रदायिक और किसी भी बेगुनाह को बख्शे बिना वस्तुतः हत्याकाण्ड कर रही हैं, ये सभी साम्राज्यवादी ताकतों, खासकर विश्व साम्राज्यवाद की धुरी अमेरिकी साम्राज्यवादियों की ही पैदाइश हैं। अमेरिकी साम्राज्यवादी और उनके सहयोगी जो आईएसआईएस और अन्य रूढ़िवादी ताकतों के आतंक और जुल्म-अत्याचार के खिलाफ इतने बड़े योद्धा होने का दिखावा कर रहे हैं, असल में धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र, नस्ल वगैरह को केन्द्र करके आम मेहनतकश लोगों के बीच लगातार फूट पड़ी रहना सुनिश्चित करने के लिए धार्मिक कट्टरपंथी ताकतों को बनाये रखने और पोषित करने तथा इस प्रकार अपने घृणित षड़यंत्र के खिलाफ लाखों उत्पीड़ितों के किसी सच्चे अभ्युत्थान की सम्भावना का गला घोंट देने के लिए तत्पर हैं।

पश्चिम एशिया में व्यापक पैमाने पर पलायन के लिए अमेरिकी साम्राज्यवादी जिम्मेदार

दुनिया भर में तमाम शांति-कामी जनवाद-पसंद लोग जानते हैं कि अमेरिका या ब्रिटेन जैसी साम्राज्यवादी महाशक्तियाँ एक देश में पहले साम्प्रदायिक या नस्लीय विभाजनों को अंजाम देती हैं और फिर साम्राज्यवादी दखलअंदाजी के लिए जमीन तैयार करने की खातिर उसी को बहाना बनाती हैं। इसे हमने रोमानिया, पूर्ववर्ती युगोस्लाविया में सर्बों, क्रोएटों और बोसनियनों के बीच नस्लीय टकरावों को भड़काने में, कम्बोडिया, रवाण्डा, सोमालिया और ऐसे ही अन्य देशों में भी देखा है। अब पता चला है कि ब्रिटिश संसद ''शैतान असद हुकूमत'' पर ताजा हमलों के लिए सीरिया पर बम बरसाने के प्रस्ताव पर विचार कर रही है ताकि ''स्रोत से ही'' शरणार्थी प्रस्थान को रोका जा सके। यह सच है कि उन्मत्त अमानवीय और बेकाबू व उत्तेजित आईएसआईएस लोगों को पलायन के लिए मजबूर कर रही है लेकिन आईएसआईएस तो अमेरिकी साम्राज्यवाद की ही देन है। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस जैसी साम्राज्यवादी महाशक्तियाँ और उनके क्षेत्रीय सहयोगी लगातार दखलअंदाजी कर रहे हैं। बागी ताकतो को धन, ट्रेनिंग और हथियार मुहैया करा रही हैं जैसी कि लीक किये गये हालिया अमेरिकी खुफिया दस्तावेजों ने रेखांकित किया है। इसलिए, यह साम्राज्यवाद, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवाद द्वारा प्रायोजित युद्धों, भुखमरी, प्रतिबंधों और योजनाबद्ध ढंग से फैलाई गई अस्थिरता के साथ-साथ बढ़ती गरीबी और दमन-उत्पीड़न ही है जो यूरोपीय सरहदों के आर-पार और भूमध्यसागर के आर-पार हजारों हजार युद्ध शरणार्थियों के आये सैलाब की सबसे बड़ी वजह हैं। विभिन्न अरब देशों में जहाँ के लोग अब भाग रहे हैं वहाँ किये जाने वाले हर अवैध सैनिक हस्तक्षेप में प्रमुख यूरोपीय नाटो ताकतों ने अमेरिकी साम्राज्यवाद के साथ साँठगाँठ की है। एक स्तम्भकार ने यह टिप्पणी ठीक ही की है कि '' हाँ, आईएसआईएस क्रूर है लेकिन अमेरिका इससे भी ज्यादा क्रूर है।'' एक फ्रांसीसी फुटबाल विभूति ने कहा है कि देश-विदेश में पश्चिमी महाशक्तियों द्वारा उकसाये जाने वाले विदेशी द्वेष के बढ़ने से वह बड़ा विक्षुब्ध है और भूमण्डलीय शरणार्थी संकट के लिए उनकी कटु आलोचना की है। उनकी मातृभूमि छोड़ने पर मजबूर करने वाले अमेरिका द्वारा थोपे गये गृहयुद्ध का हवाला देते हुए एक सीरियाई प्रवासी ने टिप्पणी की है, '' हम तुम्हारे फायदों के पीछे नहीं दौड़ रहे हैं, हम तुम्हारे बमों से बचते भाग रहे हैं।'' प्रवासियों को स्वीकारने में यूरोपीय देश चाहे जितने भी 'उदार' चेहरे पेश कर लें, सच्चाई यह है कि इन बेघर, उजड़े लोगों को उनके द्वारा अपने मुनाफे को अत्यधिक करने के खेल में सस्ती श्रम शक्ति के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा। तस्वीरें सामने आई हैं कि शरणार्थियों के साथ 'जानवरों जैसा' बर्ताव किया जा रहा है और सर्बिया की सीमा से सटे हंगरी के कैम्प पर भोजन के बैग फेंके जा रहे हैं। नजारा इतना दिल दहला देने वाला है, हृदयविदारक है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित मशहूर कविता 'अफ्रीका' की इन कालजयी पंक्तियों की बरबस याद दिला देता है :

''बेशर्म क्रूरता में नंगी खड़ी सभ्यता की बर्बर लोलुपता
धुंधाच्छादित जंगलों में तुम्हारी निशब्द चित्कार
खून और आँसुओं से सना कीचड़ बनी तुम्हारी माटी
रौंदे गये राक्षसी पाँव के नुकीले बूटों तले
वीभत्स मिट्टी के ढेले
छोड़ गये हैं तुम्हारे अपमानित इतिहास पर शाश्वत निशानियाँ।''

इसलिए शरणार्थियों के तुरंत उचित पुनर्वास की माँग करते हुए और प्रत्येक शांतिकामी, जनवाद पसंद लोगों से उनके हित के प्रति सहानुभूति रखने और किसी भी परोपकारी व्यक्ति को अपेक्षित हर तरह की उन्हें मदद देने का आग्रह करते हुए, हम एक बार फिर दोहराना चाहते हैं कि जब तक साम्राज्यवाद-विरोधी, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवाद-विरोधी विश्वव्यापी, सुसंगठित, सुसंयोजित जुझारू शांति आन्दोलन सही क्रान्तिकारी नेतृत्व के तहत उभर कर सामने नहीं आता है और तमाम देशों में यह फैल नहीं जाता है, तब तक मौत के ताण्डव का अंत नहीं होगा। ●●●

आईटीआई प्रशिक्षणार्थियों की समस्याओं पर
डीवाईओ द्वारा विरोध प्रदर्शन

रायपुर (छ.गढ़) : 22 सितम्बर को एआईडीवाईओ, छत्तीसगढ़ राज्य इकाई द्वारा आईटीआई प्रशिक्षणार्थियों की समस्याओं को लेकर राजधानी रायपुर में एक दिवसीय कन्वेन्शन व धरना-प्रदर्शन किया गया और ज्ञापन सौंपा गया।

ज्ञापन में सेमेस्टर प्रणाली वापस लेने, नेगेटिव मार्किंग बंद करने, सभी को 1500 रुपये स्टाइफण्ड देने, प्रशिक्षणार्थियों को अपनी ही आईटीआई में परीक्षा देने का नियम बनाने, रिजल्ट एक माह के अन्दर देने, प्रेक्टीकल सुविधा उन्नत करने, आधुनिक तकनीकी के अनुसार कोर्स को अपडेट करने, आईटीआई में भोजन की सुव्यवस्था करने, सभी बेरोजगारों को रोजगार देने, तब तक जीने लायक बेरोजगारी भत्ता देने, न्यूनतम मजदूरी 15000 रुपये महीना देने, श्रम कानूनों में मजदूर-विरोधी बदलाव लाना बंद करने, ठेकेदारी प्रथा बंद करने, कच्चे कर्मचारियों को नियमित करने, आउटसोर्सिंग बंद करने आदि मांगें की गई।

धरना सभा को राज्य संयोजक विश्वजीत हारोडे, पंकज यादव व अन्यों ने सम्बोधित किया। इस धरने में रायपुर, भिलाई व दुर्ग के प्रशिक्षणार्थी शामिल हुए।

अध्यापकों पर लाठीचार्ज की निन्दा

भोपाल (म.प्र.) : अध्यापकों द्वारा 13 सितम्बर को समान काम समान वेतन जैसी शिक्षा विभाग से सम्बन्धित कई जायज माँगों को लेकर राज्यव्यापी आन्दोलन छेड़ा था। भाजपा-नीत प्रदेश सरकार ने उन पर कोई तवज्जो देने की बजाय शिक्षकों के शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर पुलिस से बर्बर लाठीचार्ज करवाया और शिक्षकों की धर पकड़ करवाई। सरकार की इस दमनकारी नीति की एआईडीएसओ ने निन्दा की। इससे पहले भी सरकार ने शिक्षकों व स्वास्थ्य कर्मियों के आन्दोलन को कुचलने के तानाशाहीपूर्ण रवैये का परिचय दिया था। सरकार अपनी हठधर्मिता व अड़ियल रवैय के चलते अध्यापकों की जायज माँगें मान नहीं रही है। जबकि छ.ग. व राजस्थान सरकार ने शिक्षकों की माँगें मानी और उनका संविलयन शिक्षा विभाग में किया है। एआईडीएसओ के म.प्र. संयोजक मुदित भटनागर ने सरकार से यह दमनात्मक कार्रवाई बंद करने और शिक्षकों की जायज मांगें मान लेने की अपील की।

पास-फेल प्रणाली पुनः चालू करने, सेमेस्टर सिस्टम समाप्त करने की मांग पर
त्रिपुरा में एआईडीएसओ ने किया प्रदर्शन

अगरतला : भाजपा-नीत केन्द्र सरकार द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर चर्चा के लिए मावन संसाधन विकास मंत्री स्मृति इरानी के राज्य दौरे के अवसर पर 18 सितम्बर को यहाँ आकाशवाणी भवन के सामने एआईडीएसओ त्रिपुरा राज्य कमेटी ने प्रदर्शन किया।

छह सूत्री माँग पत्र में स्कूलों में 8वीं कक्षा तक पास-फेल प्रणाली तुरंत पुनः चालू करने, बेरोकटोक पास नीति वापस लेने, कॉलेज स्तर पर सेमेस्टर सिस्टम समाप्त करने, शिक्षा के मद में बजट आवंटन बढ़ाने और शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण-साम्प्रदायीकरण को रोकने आदि माँगे शामिल थी। अगरतला आकाशवाणी के सामने हुई सभा को एआईडीएसओ के राज्य सचिव मृदुल सरकार सहित राज्य कमेटी के नेताओं ने सम्बोधित किया। वक्ताओं ने शिक्षा पर केन्द्रीय सरकार की नीतियों और कदमों की आलोचना की और जब तक माँगें मान नहीं ली जाती आन्दोलन जारी रखने की शपथ ली।

गुड़गांव में एसयूसीआई(सी) व सीपीआई(एम) की ओर से 27 सितम्बर को साम्प्रदायिकता-विरोधी कन्वेन्शन आयोजित किया गया। एसयूसीआई(सी) के राज्य सचिव कॉ. सत्यवान ने भी इसे सम्बोधित किया।

8 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing : 5 October, 2015

सर्वहारा दृष्टिकोण

7 अक्तूबर, 2015

सीरिया आदि देशों के शरणार्थियों की सुरक्षा व पुनर्वास के लिए साम्राज्यवाद–विरोधी मंच ने की जोरदार आवाज बुलंद

रोहतक (हरियाणा) : साम्राज्यवादियों के सरगना अमेरिका और इसके पिट्ठू देशों की विस्तारवादी, दादागिरी, विश्वव्यापी गुण्डागर्दी, लूट–खसोट और मारकाट की घिनौनी नीतियों व साजिशों के खिलाफ अखिल भारतीय साम्राज्यवाद–विरोधी मंच की ओर से 2 अक्तूबर को यहां छोटूराम पार्क से नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा तक एक विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारियों ने सीरिया, लिबिया, सुडान, अफगानिस्तान आदि पश्चिम एशियाई व अफ्रीकी देशों के शरणार्थी और प्रवासी बन रहे लाखों लोगों की सुरक्षा व पुनर्वास के लिए जोरदार आवाज बुलंद की।

प्रदर्शनकारियों को साम्राज्यवाद–विरोधी मंच के प्रदेश संयोजक राजेन्द्र सिंह एडवोकेट, मुंशीराम इन्दोरा एडवोकेट रोहतक, रिटायर्ड प्रिंसीपल रघबीर सिंह दहिया, जितेन्द्र सिंह एडवोकेट सोनीपत, आदि ने संबोधित किया।

वक्ताओं ने बताया कि अमेरिकी साम्राज्यवाद लोगों को धर्म, इलाके, नस्ल और यहां तक कि शिया–सुन्नी जैसे एक ही धर्म में विभिन्न समुदायों के आधार बांटने की दुष्टतापूर्ण साजिशें रच रहा है। जिन देशों के शासक अमेरिका की हेंकड़ी के सामने घुटने नहीं टेकते, अमेरिकी साम्राज्यवाद द्वारा उन्हें सत्ता से उखाड़ने के लिए अलकायदा, तालिबान और आईएसआईएस जैसी कुख्यात घोर बर्बर व कट्टरपंथी ताकतें पैदा की गई हैं, इन्हें अत्याधुनिक हथियारों से लैस किया है और जब ये भस्मासुर बन गई तो इन्हें कुचलने के नाम पर उसने उन देशों के अन्दरूनी मामलों में सैन्य हस्तक्षेप, हमले, नरसंहार किये हैं। उनमें अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार किया है। उन देशों के तेल क्षेत्रों पर कब्जा किया है और उनके प्राकृतिक संसाधनों को लूटा है। पश्चिम एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में जो बर्बरतापूर्ण आतंक व क्रूरता बरपाई जा रही है, वह इसी साजिश का हिस्सा है। इसके नतीजतन सीरिया, लिबिया, सुडान, अफगानिस्तान आदि पश्चिम एशियाई व अफ्रीकी देशों के लाखों लोग जान बचाने के लिए अपने घर–बार छोड़ कर दूसरे स्थानों और देशों में शरण लेने के लिए भाग रहे हैं। मार्च 2011 में युद्ध छिड़ने के बाद अकेले सीरिया से लाखों लोग घर छोड़ चुके हैं। इनमें से 30 लाख तुर्की, लेबनान, जोर्डन में, 65 लाख लोग सीरिया के एक हिस्से से दूसरे हिस्सों में और 1.50 लाख यूरोपीय देशों में शरण लेने पर मजबूर हुए हैं। इसी तरह एक करोड़ 40 लाख लोग पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका व अफ्रीका के उप–सहारा क्षेत्र से विस्थपित हुए हैं। इनमें अफ्रीका के 30 लाख लोगों को किसी भी तरह की न्यूनतम सुरक्षा व बचाव तक मुहैया नहीं है। हमारे पड़ोसी देश म्यांमार (बर्मा) में रोहिंग्या नामक मुस्लिम समुदाय का बड़ी क्रूरता से उत्पीड़न किया गया। उन पर घातक हमले किये गये। दक्षिण अमेरिका में भी ऐसे मामले हुए हैं।

रोहतक : पश्चिम एशियाई शरणार्थियों की सुरक्षा व पुनर्वास के लिए आवाज बुलंद करते साम्राज्यवाद–विरोधी मंच के कार्यकर्ता

अतीत में अमेरिकी साम्राज्यवाद ने वियतनाम, लाओस, कम्बोडिया, इथोपिया, कोरिया में क्रूर हमले, बमबारी, नरसंहार व षड़यंत्र किये थे। आज वह अफगानिस्तान, इराक, लिबिया, सीरिया, फिलस्तीन व अन्य देशों में भीषण तबाही मचा रहा है। अमेरिकी साम्राज्यवाद द्वारा थोपे गये युद्धों व भ्रातृघाती झगड़ों में हर वक्त मौत के मुंह में पड़े होने के साथ–साथ इन देशों के लोग साम्राज्यवादी शोषण व लूट के भी शिकार हैं। घोर गरीबी, बेरोजगारी व आर्थिक संकट से जूझते हुए टिड्डी दल की तरह वे अपना वतन छोड़ने और शरणार्थ–प्रवासी बनने पर मजबूर हैं। हत्या, बलात्कार, ऐतिहासिक स्मारकों के विध्वंस जैसे अपराधों में लिप्त अलकायदा के परस्पर–विरोधी गुटों को अमेरिका व अन्य साम्राज्यवादी देश अपने हथियार बेच रहे हैं ताकि साम्राज्यवादियों के युद्ध सामग्री बनाने वाले कारखाने बंद न हों, उन्हें प्रोत्साहन मिले और वे भारी मुनाफा कमा कर अपनी बाजार अर्थव्यवस्था को डूबने से बचाने का प्रयास कर सकें। अगर आज समाजवादी खेमा मौजूद होता तो ये सब उदण्डता करने की अमेरिकी साम्राज्यवाद को हिम्मत ही नहीं पड़ती।

साम्राज्यवादी कुचक्रों में फंसे हुए लाखों लोगों को बचाने के लिए जनतांत्रिक सोच वाले लोगों को पहलकदमी कर आगे आने और विश्व जनमत के साथ व्यापक एका कायम करते हुए सीरिया आदि देशों के शरणार्थी–प्रवासी बन रहे लाखों लोगों की सुरक्षा व उनके पुनर्वास के लिए जोरदार आवाज बुलंद करने की वक्ताओं ने अपील की।

केन्द्रीय संस्कृति मंत्री की महिला–विरोधी टिप्पणी की
एआईएमएसएस ने की निन्दा

20 सितम्बर को जारी बयान में एआईएमएसएस की महासचिव डॉक्टर एच जी जयालक्ष्मी ने कहा :

19 सितम्बर 2015 को सीएनएन–आईबीएन को दिये एक साक्षात्कार में केन्द्रीय संस्कृति मंत्री की पितृसत्तात्मक टिप्पणी पर ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) बेहद क्षुब्द है। ''रात में बाहर निकलना चाहने वाली लड़कियाँ और कहीं ठीक हैं लेकिन यह हमारी भारतीय संस्कृति का हिस्सा नहीं है'' अपने इन शब्दों के जरिये उन्होंने न केवल महिलाओं की आजादी की खिलाफत की है बल्कि संघ परिवार और आरएसएस द्वारा परिभाषित 'भारतीय संस्कृति' को भी आगे बढ़ाया है।

बढ़ती आलोचना और निन्दा के दबाव के चलते बाद में उन्होंने स्पष्टीकरण दिया कि ''मैंने कभी नहीं कहा कि लड़कियों को रात में बाहर नहीं जाना चाहिए। मैंने सिर्फ इतना कहा कि भारतीय और यूरोपीय संस्कृतियाँ भिन्न हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैंने कहा कि लड़कियों को बाहर नहीं जाना चाहिए,'' और ''मैं पश्चिम की तमाम अच्छी चीजें लेने का इच्छुक हूँ, मैं पश्चिम की आलोचना नहीं कर रहा हूँ। लेकिन मैं पश्चिम का अंधानुकरण करने का इच्छुक नहीं हूँ।'' यह सिर्फ उनकी पहले की टिप्पणी को जायज ठहराने का व्यर्थ प्रयास है।

एआईएमएसएस उनकी टिप्पणी की तीव्र निन्दा करता है और देश के जनवाद पसंद सही सोच रखने वाले लोगों का आह्वान करता है कि वे सत्ताधारियों के ऐसे दुर्भावना भरे कुवचनों के प्रति हमेशा चौकस रहें। एआईएमएसएस प्रधानमंत्री से माँग करता है कि वे अपने सहकार्यकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई करें जो बार–बार ऐसी महिला–विरोधी टिप्पणियाँ करते रहते हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव में
10 सीटों पर चुनाव लड़ रही है एसयूसीआई(सी)

(सीपीआई, सीपीआई(एम), आरएसपी, ऑल इण्डिया फारवर्ड ब्लॉक, सीपीआई(एम–एल लिबरेशन) और एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) को लेकर हाल ही में बने वाम दलों के ब्लॉक के बीच निम्नलिखित 6 विधानसभा सीटों का तालमेल हुआ है।)

क्र.	जिला	वि. स. क्षेत्र	उम्मीदवार
1.	**मुजफ्फरपुर**	1. पारू	**कॉमरेड ननहक साह**
		2. कांटी	**कॉमरेड लालबाबू राय**
2.	**वैशाली**	3. वैशाली	**कॉमरेड सिंगेश्वर भगत**
3.	**पटना**	4. दानापुर	**कॉमरेड नताशा शर्मा**
4.	**बांका**	5. बेल्हार	**कॉमरेड अर्जुन लाल**
5.	**मुंगेर**	6. जमालपुर	**कॉमरेड प्रमोद कुमार**

निम्नलिखित 4 विधानसभा क्षेत्रों में राज्य पार्टी को वाम ब्लॉक के पार्टनरों के साथ दोस्ताना मुकाबला करना पड़ेगा।

क्र.	जिला	वि. स. क्षेत्र	उम्मीदवार
1.	**वैशाली**	महुआ	**कॉमरेड ललित कुमार घोष** (सीपीआई के साथ)
2.	**अरवाल**	कुथी	**कॉमरेड रूपेश कुमार** (सीपीआई(एम–एल) लिबरेशन के साथ)
3.	**मुंगेर**	तारापुर	**कॉमरेड कृष्णदेव साह** (सीपीआई के साथ)
4.	**भागलपुर**	नाथनगर	**कॉमरेड दीपक कुमार** (सीपीआई(एम) के साथ)

"Print-line
Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."

Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com फोन नं. : 011–25726631